इकाई 1 नवीन पुरातात्विक उत्खननों के परिप्रेक्ष्य

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 नवीन पुरातात्विक उत्खनन की प्रासंगिकता और महत्व

1.3 नवीन पुरातात्विक स्थलों का संक्षिप्त सर्वेक्षण

1.4 पुरातात्विक अन्वेषण एवं उत्खनन की विधियाँ

1.5 नवीन पुरातत्व एवं साक्ष्यों की विश्लेषण पद्धति

1.5.1 पुरातात्विक तिथिक्रम प्रणाली

1.5.2 पुरातात्विक साक्ष्यों का महत्व

1.6 नवीन पुरातात्विक उत्खनन के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव

1.6.1 नवीन पुरातात्विक उत्खनन के अनुसंधान की आवश्यकता और संभावनाएं

1.6.2 नवीन पुरातात्विक उत्खनन के भविष्य के दिशानिर्देश

1.7 सारांश

1.8 पारिभाषिक शब्दावली

1.9 सन्दर्भग्रन्थ सूची

1.10 बोध प्रश्न

1.0 उद्देश्य

नवीन पुरातात्विक उत्खननों के परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- पुरातात्विक उत्खनन का अर्थ समझ सकेंगे।
- भारतीय संस्कृति और इतिहास का पुनरावलोकन कर सकेंगे।
- अतीत के पुनर्निर्माण में पुरातत्व के योगदान से आप अवगत हो सकेंगे।
- पुरातात्विक साक्ष्यों की परीक्षण तकनीक का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतीय उपमहाद्वीप के प्रमुख नवीन पुरातात्विक स्थलों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- इकाई से सम्बद्ध पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! इतिहास और पुरातत्व, दोनों ही अतीत के पुनर्निर्माण में अपना योगदान देने का उद्देश्य रखते हैं, हालांकि उनके उपयोगकर्ता और उपाय भिन्न होते हैं। इतिहास में लिखित दस्तावेज़ों का सहारा लिया जाता है, जबकि पुरातत्व अवशेषों का अध्ययन करता है, जो

मानव सभ्यता के इतिहास में बनाए और उपयोग किए गए थे। ये अवशेष मानव व्यवहार और अनुभव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। इन अवशेषों में विभिन्न चीजें शामिल हैं, जैसे पत्थर के औज़ार, इमारतें, ईंटें, मिट्टी के बर्तन, धातु की वस्तुएँ, मूर्तियाँ, सिक्के, शिलालेख, आदि। ये सभी सामग्रियाँ पृथ्वी की सतह और उसके नीचे पाई जाने वाली पुरातात्विक स्रोत के रूप में प्राप्त होती हैं। सिक्कों और शिलालेखों का अध्ययन करने के लिए मुद्राशास्त्र और पुरालेखशास्त्र जैसे उपविषयों को भी शामिल किया गया है।

मानव इतिहास को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(i) ऐतिहासिक, और (ii) प्रागैतिहासिक काल।

ऐतिहासिक काल की शुरुआत उस समय हुई थी, जब लगभग 5000 साल पहले विभिन्न क्षेत्रों में लेखन का प्रयोग शुरू हुआ। बाद में, लेखन के विकास के साथ, इसका उपयोग तथ्य संग्रहण और साहित्यिक लेखन में किया गया। हालांकि साक्षर काल मानव इतिहास का एक छोटा हिस्सा है, जो पिछले कुछ हज़ार वर्षों की जाँच-पड़ताल करने में मदद करता है। वहीं, प्रागैतिहासिक काल की शुरुआत तीस लाख साल पहले हुई थी, जब मानव जाति की उत्पत्ति हुई थी। हालांकि पुरातत्व प्रागैतिहासिक काल तक सीमित नहीं होता, लेकिन समय-समय पर मानवों द्वारा छोड़ी गई सभी सामग्रियों का अध्ययन किया जाता है। इसलिए, पुरातत्वविदों ने प्रागैतिहासिक उपकरणों से लेकर वर्तमान में दैनिक उपयोग की वस्तुओं तक सभी का अध्ययन किया है।

प्रत्येक समाज अपने अतीत से जुड़ा होता है। पुरातत्व की उत्पत्ति का पता सुंदर पुरानी चीजों और खजानों की खोज के आकर्षण से लगाया जा सकता है। 1817 ईस्वी में डेनिश विद्वान सी. जे. थामसन ने पुरातत्व के प्रारंभिक चरण को पाषाण युग, कांस्य युग तथा लौह युग में बाँटा। उस समय के पुरातत्व में ग्रंथ-आधारित पुरातत्व और प्रागैतिहासिक पुरातत्व शामिल थे, जो ग्रंथों पर आधारित नहीं थे। आज यह कई विषयों जैसे पर्यावरण पुरातत्व, जैव-पुरातत्व, भू-पुरातत्व आदि में बँट गया है।

भारत में भी पुरातत्व की शुरुआत ऐसे ही हुई। यह प्राचीन वस्तुओं को इकट्ठा करने की कला के बाद औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ। इसमें उत्खनन और प्रासंगिक विश्लेषण के कठोर तरीकों के बिना स्थलों और अवशेषों का अध्ययन किया गया था। शुरुआत में ग्रंथ-आधारित पुरातत्व का प्रभुत्व था। सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग का विस्तार से सर्वेक्षण किया। कनिंघम ने चीनी तीर्थयात्रियों जैसे जुआन जंग के वृत्तांत में उल्लिखित शहरों और बस्तियों की पहचान करने की कोशिश की। 1861ईस्वी में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) की स्थापना की गई। इसके पहले महानिदेशक कनिंघम थे। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में कई क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया, स्मारकों का मानचित्र और संकलन तैयार किया गया। 20वीं सदी की शुरुआत में, वायसराय लॉर्ड कर्जन के प्रयासों तथा पुरातत्व में उनकी रुचि के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में पुरातात्विक अवशेषों के सम्मान तथा प्राचीन भारतीय स्मारकों के संरक्षण हेतु 1904 ईस्वी में प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम पारित किया गया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय भूमि पर पुरातात्विक धरोहर के महत्वपूर्ण नवीन स्थलों की खोज एक रोचक और महत्वपूर्ण क्रिया बनी है। यह खोज न केवल भारतीय इतिहास और

संस्कृति को समृद्ध करने में मदद करती है, बल्कि यह दुनिया के संबंधित प्राचीन सभ्यताओं के साथ भारत के संवाद को भी बढ़ावा देती है। इसके अंतर्गत, हम नए दृष्टिकोण और तकनीकों का उपयोग करके पुरातात्विक साक्ष्यों की पहचान, अध्ययन, और विश्लेषण के तरीकों के बारे में विचार करेंगे।

1.2 नवीन पुरातात्विक उत्खनन की प्रासंगिकता और महत्व

नवीन पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से हम अपने पूर्वजों के समृद्ध धरोहर को समझ सकते हैं और उसके महत्वपूर्ण जानकारी को प्राप्त कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत नवीन पुरातात्विक उत्खनन की आवश्यकता, प्रासंगिकता और इसके महत्व को विश्लेषण किया जा सकता है।

नवीन पुरातात्विक उत्खनन की आवश्यकता:

- **नए ज्ञान की प्राप्ति**: नवीन पुरातात्विक उत्खनन से हमें अतीत के अध्ययन में नए और अद्वितीय ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- **संशोधन की स्थापना**: नवे उत्खनन प्रोजेक्ट्स से नए संशोधन दिशानिर्देश प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जिनसे अतीत की समझ में नई प्रेरणा प्राप्त होती है।
- **तकनीकी उन्नति**: नवीन तकनीकों का प्रयोग करते हुए उत्खनन द्वारा हमें संशोधन की गुणवत्ता और तारीख़ों की सटीकता में वृद्धि होती है।

प्रासंगिकता:

- **सांस्कृतिक आदिकाल का अध्ययन**: नवे उत्खनन प्रोजेक्ट्स से हमें सांस्कृतिक आदिकाल की जानकारी मिलती है, जिनसे हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझ सकते हैं।
- **धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों की पहचान**: नवे उत्खनन से हम विभिन्न धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों की पहचान कर सकते हैं, जिनसे हमें उनके महत्व की समझ में मदद मिलती है।
- **समाजिक संरचना की समझ**: नवीन पुरातात्विक उत्खनन से हमें प्राचीन समय की समाजिक संरचना की समझ होती है, जो आज के समाज के लिए महत्वपूर्ण है।

महत्व:

- **अतीत की समझ में मदद**: नवीन पुरातात्विक उत्खनन से हमें अतीत की गहराई में जाने का अवसर मिलता है, जिससे हम अपने अतीत को बेहतर समझ सकते हैं।
- **शैक्षिक प्रेरणा**: नवीन उत्खनन प्रोजेक्ट्स से छात्रों, शोधकर्ताओं और सामान्य लोगों को शैक्षिक प्रेरणा प्राप्त होती है, जो अपने अन्वेषण और अनुसंधान कौशलों को विकसित करना चाहते हैं।
- **भौगोलिक और सांस्कृतिक ज्ञान का विकास:** नवीन उत्खनन से हमें भौगोलिक और सांस्कृतिक ज्ञान का विकास होता है, जिससे हम अपने समाज और वातावरण की समझ में सुधार कर सकते हैं।

इस प्रकार, नवीन पुरातात्विक उत्खनन की प्रासंगिकता और महत्व विषय में विश्लेषण करके हमें यह समझने में मदद मिलती है कि नवीन पुरातात्विक उत्खनन क्यों महत्वपूर्ण है? और कैसे यह हमारे समाज और अतीत की समझ में सहायक हो सकता है।

1.3 नवीन पुरातात्विक स्थलों का संक्षिप्त सर्वेक्षण

नवीन पुरातात्विक स्थलों का सर्वेक्षण इतिहास और पुरातात्व अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि ये स्थल नई जानकारी और साक्ष्य प्रदान करते हैं जो हमारे पूर्वजों की जीवनशैली, संस्कृति, और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में हमारी समझ को बढ़ाते हैं। यहां कुछ नवीन पुरातात्विक स्थलों का संक्षिप्त सर्वेक्षण है:

1. **राखीगढ़ी:** राखीगढ़ी या राखी गढ़ी उत्तरी भारतीय राज्य हरियाणा के हिसार जिले में सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित एक गाँव और पुरातात्विक स्थल है, जो दिल्ली से लगभग 150 किमी उत्तर पश्चिम में स्थित है। राखीगढ़ी सिन्धु घाटी सभ्यता का भारतीय क्षेत्रों में धोलावीरा के बाद दूसरा विशालतम ऐतिहासिक नगर है। इसकी प्रमुख नदी घग्घर है। इस स्थल पर आरंभिक खुदाई 1960 के दशक में हुई। उसके बाद 1990 के दशक के अंत में आगे की खुदाई हुई। हालाँकि पिछले दशक में और अधिक निरंतर खुदाई हुई है। राखीगढ़ी का उत्खनन व्यापक पैमाने पर 1997-1999 ई. के दौरान अमरेन्द्र नाथ द्वारा किया गया। भारतीय पुरातत्व विभाग ने राखीगढ़ी में खुदाई कर एक पुराने शहर का पता लगाया था और तकरीबन **5000** साल पुरानी कई वस्तुएँ बरामद की थीं। अंग्रेजों की खुदाई से माना जाता था कि सिंधु सभ्यता के नगरों की **2600** ईसा पूर्व स्थापना हुई थी। इस सोच को राखीगढ़ में पाए गए पुरावशेष से बदल कर रख दिया। अब माना जाता है कि यह सभ्यता **5500** साल नहीं बल्कि **8000** साल पुरानी थीं। वैज्ञानिकों की एक टीम के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता का विस्तार हरियाणा के भिर्राना और राखीगढ़ी में भी था। उन्होंने भिर्राना की एकदम नई जगह पर खुदाई शुरू की और बड़ी चीज बाहर लेकर निकले। इसमें जानवरों की हड्डियां, गायों के सिंग, बकरियों, हिरण और चिंकारे के अवशेष मिले।

राखीगढ़ी का प्राचीन स्थल,हिसार

राखीगढ़ी से प्राक्-हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा युग इन दोनों कालों के प्रमाण मिले हैं। यहाँ से मातृदेवी अंकित एक लघु मुद्रा प्राप्त हुई। राखीगढ़ी में लोगों के आने जाने के लिए बने हुए मार्ग, जल निकासी की प्रणाली, बारिश का पानी एकत्र करने का विशाल स्थान, कांसा सहित कई धातुओं की वस्तुएँ मिली थीं। राखीगढ़ी से महत्त्वपूर्ण स्मारक एवं पुरावशेष प्राप्त हुए हैं, जिनमें दुर्ग-प्राचीर, अन्नागार, स्तम्भयुक्त वीथिका या मण्डप, जिसके पार्श्व में कोठरियाँ भी बनी हुई हैं, ऊँचे चबूतरे पर बनाई गई अग्नि वेदिकाएँ आदि मुख्य हैं।

हरियाणा में इससे पहले भी राखीगढ़ी, मीताथल और बनावली में हड़प्पाकालीन स्थल मिले थे, लेकिन फरमाना में पहली बार हड़प्पा काल के दो अलग-अलग समय के अवशेष एक साथ में मिले हैं। फरमाना से कुछ दूर खुदाई का काम हुआ है और करीब एक एकड़ क्षेत्र में हड़प्पाकालीन घरों के अवशेष देखे जा सकते हैं। सड़कें सीधी और नब्बे डिग्री के कोण पर मुड़ती हैं, जो मोहनजोदड़ों में भी दिखता है। इसके अलावा घरों के दरवाजे पूर्व की तरफ हैं। इस खुदाई स्थल पर फिलहाल **27** कमरों की नींव मिली हैं, जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहाँ कितने लोग रहते होंगे। इन कमरों में रसोई जैसी आकृतियाँ देखी जा सकती हैं, जिनके पास बर्तन के टुकड़े भी पाए गए हैं।

2. **धोलावीरा** : धोलावीरा (**230 53' 10"** उत्तर; **700 13'**पूर्व) पश्चिमी भारत में गुजरात राज्य के कच्छ जिले के भचाऊ तालुका में खादिरबेट में एक पुरातात्विक स्थल है। स्थानीय रूप से कोटाडा टिम्बा के रूप में भी जाना जाने वाला यह स्थल प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के एक शहर के खंडहर हैं। यह पांच सबसे बड़े हड़प्पा स्थलों में से एक है और सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित भारत के पुरातात्विक स्थलों में सबसे प्रमुख है। यह कच्छ के महान रण में कच्छ रेगिस्तान वन्यजीव अभयारण्य में खादिर बेट द्वीप पर स्थित है। 47 हेक्टेयर (120 एकड़) का चतुर्भुजाकार शहर दो मौसमी धाराओं, उत्तर में मानसर और दक्षिण में मनहर के बीच स्थित है। इसकी खोज सबसे पहले 1960 के दशक की शुरुआत में धोलावीरा गांव के निवासी शंभुदान गढ़वी ने की थी, जिन्होंने इस स्थान पर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के प्रयास किए थे। यह स्थल "आधिकारिक तौर पर" 1967-68 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के जे.पी. जोशी द्वारा खोजा गया था, और यह आठ प्रमुख हड़प्पा स्थलों में से पांचवां सबसे बड़ा स्थल है। 1990 से एएसआई द्वारा इसकी खुदाई की जा रही है, जिसमें कहा गया है कि "धोलावीरा ने वास्तव में सिंधु घाटी सभ्यता के व्यक्तित्व में नए आयाम जोड़े हैं।" अब तक खोजे गए अन्य प्रमुख हड़प्पा स्थल हड़प्पा, मोहनजो-दारो, गनेरीवाला, राखीगढ़ी, कालीबंगन, रूपनगर और लोथल हैं।इसे 27 जुलाई 2021 को धोलावीरा: एक हड़प्पा शहर के नाम से यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया था।

इसमें एक किलानुमा शहर और एक कब्रिस्तान शामिल है। इसे दो मौसमी जलधाराओं ने जलप्रदान किया। यह इस क्षेत्र में एक दुर्लभ संसाधन है। इस दीवार से घिरे शहर में एक भारी किलानुमा महल और औपचारिक मैदान के साथ-साथ रास्तों और विभिन्न अनुपात में गुणवत्तायुक्त घर शामिल हैं जो एक स्तरीय सामाजिक व्यवस्था की गवाही देते हैं। एक परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली धोलावीरा लोगों के कठिन वातावरण में जीवित रहने और पनपने के संघर्ष में उनकी चतुरता को प्रदर्शित करती है। इस स्थान में एक बड़ा कब्रिस्तान है जिसमें छह प्रकार के स्मारक हैं जो हड़प्पाकालीन मृत्यु के अनूठे दृष्टिकोण को दर्शातें हैं।

धोलावीरा :उत्खनन स्थल का भाग

धोलावीरा का गढ़, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और कालीबंगा के अपने समकक्षों के विपरीत, लेकिन बनावली की तरह, शहरी क्षेत्र के दक्षिण में बनाया गया था। कालीबंगा और सुरकोटदा की तरह इसके दो संयुक्त उपविभाग थे, जिन्हें अस्थायी रूप से धोलावीरा में 'महल' और 'बेली' नाम दिया गया था, जो क्रमशः पूर्व और पश्चिम में स्थित थे, दोनों किलेबंद हैं। पूर्व को अभेद्य सुरक्षा द्वारा सबसे अधिक उत्साहपूर्वक संरक्षित किया गया है और प्रभावशाली द्वारों, टावरों, मुख्य द्वारों और जल निकासी के साथ सौंदर्यपूर्ण रूप से सुसज्जित किया गया है। गढ़ के उत्तर में एक चौड़ा और लंबा मैदान है, जिसका उपयोग संभवतः कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे- उत्सव या औपचारिक अवसरों पर सामुदायिक सभा, एक स्टेडियम और व्यापारिक मौसमों के दौरान माल के आदान-प्रदान के लिए एक विपणन स्थान। आगे उत्तर में, चारों ओर से घिरे मध्य शहर की स्थापना की गई, जबकि इसके पूर्व में निचले शहर की स्थापना की गई। हालाँकि, अंतिम उल्लेखित किलेबंदी में कोई अनुलग्नक दुर्ग नहीं था, इसे सामान्य परिधि के भीतर स्थापित किया गया था। महल के दक्षिण के अलावा, निकटवर्ती जलाशय के पार, शहर की दीवार के साथ-साथ एक और निर्मित क्षेत्र बनाया गया था, जिसे शायद अनुचर और नौकरों के आवास के लिए एनेक्सी या गोदाम के रूप में नामित किया गया था।

इस स्थल की पुरातात्विक खुदाई के दौरान मोती बनाने के वर्कशॉप और विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ जैसे तांबा, खोल, रत्न, कम-कीमती रत्नों के आभूषण, टेराकोटा, सोना, हाथी दांत और अन्य सामग्री संस्कृति की कलात्मक और तकनीकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करती हैं। अन्य हड़प्पा शहरों के साथ-साथ मेसोपोटामिया क्षेत्र और ओमान प्रायद्वीपीय शहरों के साथ अंतर-क्षेत्रीय व्यापार के साक्ष्य भी खोजे गए हैं।

3. **हस्तिनापुर:** हस्तिनापुर महाभारत काल के कौरवों की वैभवशाली राजधानी हुआ करती थी। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के शहर मेरठ से **22** मील उत्तर-पूर्व में गंगा की प्राचीनधारा के किनारे प्राचीन हस्तिनापुर के अवशेष मिलते हैं। यहां आज भी भूमि में दफन है पांडवों का किला, महल, मंदिर और 'भी' अन्य अवशेष है।

हस्तिनापुर की प्राचीन बस्ती

पुरातत्वों के उत्खनन से ज्ञात होता है कि हस्तिनापुर की प्राचीन बस्ती लगभग **1000** ईसा पूर्व से पहले की थी और यह कई सदियों तक स्थित रही दूसरी बस्ती लगभग **90** ईसा पूर्व में बसाई गई थी, जो **300** ईसा पूर्व तक रही। तीसरी बस्ती **200** ई.पू. से लगभग **200** ईस्वी तक विद्धमान थी और अंतिम बस्ती **11**वीं से **14**वीं शती तक विद्यमान रही। अब यहां कहीं कहीं बस्ती के अवशेष हैं और प्राचीन हस्तिनापुर के अवशेष भी बिखरे पड़े हैं। वहां भूमि में दफन पांडवों का विशालकाय एक किला भी है जो देखरेख के अभाव में नष्ट होता जा रहा है। इस किले के अंदर ही महल, मंदिर और अन्य इमारते हैं।

4. **आदिचनाल्लूर:** यह स्थल भारत के तमिलनाडु के धुकुडी जिले में स्थित है। यहां प्राचीन काल के कई पुरातात्विक अवशेष मिले हैं, जो कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजों का स्थल रहा है। प्रारंभिक पांडियन साम्राज्य की राजधानी कोरकार्ड, आदिचनल्लूर से लगभग **15** किमी दूर स्थित है। आदिचनल्लूर साइट से **2004** में खोदे गए नमूनों की कार्बन डेटिंग से पता चला है कि वे **905** ईसा पूर्व और **696** ईसा पूर्व के बीच के थे। **2005** में, मानव कंकालों वाले लगभग **169** मिट्टी के कलश का पता लगाया गया था, जो कि कम से कम **3,800** साल पहले के थे। **2018** में हुई शोध के अनुसार कंकाल के अवशेषों पर **2500** ईसा पूर्व से **2200** ईसा पूर्व के तक के हैं।

आदिच्चनल्लूर, एक लौह युगीन कलश दफन स्थल

आदिच्चनल्लूर (**8° 37' 47.6"** उत्तर; **77° 52' 34.9"** पूर्व) तमिलनाडु के तूतीकोरिन जिले में ताम्ब्रापरानी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। तूतीकोरिन जिले (पूर्व में तिरुनेलवेली) के आदिच्चनल्लूर में व्यापक कलश दफन स्थल की खोज पहली बार **1876** में बर्लिन संग्रहालय के डॉ. जागोर ने की थी। ए. री ने **1910** के दशक के दौरान अच्छी संख्या में कलशों की खुदाई की और माइसीने के समान सोने के हीरे की खोज की; कांसे की वस्तुएं विशेष रूप से कई जानवरों की आकृतियों को दर्शाने वाले उत्कृष्ट पंखों वाले ढक्कन, हजारों बर्तनों के अलावा लोहे की वस्तुएं हैं। **2003-04** और **2004-05** के दौरान उत्खनन फिर से शुरू किया गया। **600** वर्ग मीटर के क्षेत्र में **160** से अधिक कलश प्रदर्शित किये गये हैं।

आदिच्चनल्लूर में कलश अंत्येष्टि के साथ उत्खनन खाइयों का सामान्य दृश्य

दफ़नाने को तीन चरणों में वर्गीकृत किया गया है, अर्थात् चरण I, II और III। चरण I में मुख्य रूप से प्राथमिक अंत्येष्टि होती है, जबकि चरण II और III में, प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार की अंत्येष्टि होती है।

आदिच्चनल्लूर में कलश अंत्येष्टि के साथ खोदी गई खाइयों का सामान्य दृश्य

कलशों के अंदर कंकाल के अवशेषों को हमेशा झुककर रखा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी दिशा-निर्देश का पालन नहीं किया गया है। दोहरे दफ़न के दो उदाहरण हैं।

एप्लिक कथा दृश्य के साथ एक बर्तन एक महत्वपूर्ण खोज है। इसमें एक पतली और लंबी महिला को केले के पेड़ के पास खड़ा दिखाया गया है। एक बगुला को पेड़ पर बैठे और मछली पकड़ते हुए दिखाया गया है। महिला के पास एक हिरण और मगरमच्छ को भी दर्शाया गया है। मिट्टी के बर्तनों पर अच्छी संख्या में भित्तिचित्र खोजे गए हैं।

कलश दफन की सामग्री: हड्डियों के अवशेष और दफन सामान यथास्थान, आदिच्चनल्लूर

मिट्टी के बर्तनों के प्रकारों में काले और लाल बर्तन, लाल बर्तन और काले बर्तन शामिल हैं। प्रमुख आकृतियों में कटोरे, बर्तन, फूलदान आदि शामिल हैं। कुछ बर्तनों को सफेद रंग से रंगा गया है। तीर की नोक, भाले की नोक और कुल्हाड़ी जैसे लोहे के उपकरण पाए जाते हैं, लेकिन नष्ट हो गए और बुरी तरह से संरक्षित हैं। कुछ तांबे के आभूषण भी मिले हैं। लोहे की एक तलवार पर भूसी और कपड़े की छाप मिली है। आवासीय स्थल में कुम्हार का भट्ठा भी पाया गया।

कलश दफन की सामग्री: हड्डियों के अवशेष और दफन सामान यथास्थान, आदिच्चनल्लूर

दफन कलश की सामग्री: चावल की भूसी के अवशेष, आदिच्चनल्लूर

ये सभी स्थल पुरातात्विक खोदाई और अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं और इतिहास और पुरातात्व अध्ययन के क्षेत्र में नई जानकारी और साक्ष्य प्रदान करते हैं।

5. **शिवसागर:** यह स्थल असम में गुवाहाटी से लगभग 360 किलोमीटर उत्तर पूर्व में स्थित है। यह शहर देहिंग वर्षावन से घिरा हुआ है, जहां दीहिंग (ब्रह्मपुत्र) और लोहित नदियां मिलती है। शहर का नाम शहर के मध्य में स्थित बड़ी झील

शिवसागर

शिवसागर से मिलता है। झील अहोम राजा शिव सिंहा द्वारा बनाई गई थी। **13** वीं शताब्दी में युन्नान क्षेत्र से चीन के ताई बोलने वाले अहोम लोग इस इलाके में आए **18** वीं शताब्दी में शिवसागर अहोम साम्राज्य की राजधानी था। उस समय यह रंगपुर कहलाता था। उस काल के कई मंदिर मौजूद है। इस शहर को मंदिरों की नगरी भी कहा जाता है।

6. **भिर्राना**: **2003** से भिर्राना (**290 33'** उत्तर; **750 33'** पूर्व), (घग्गर नदी के बाएं किनारे पर), जिला फतेहाबाद, हरियाणा में एएसआई द्वारा की गई खुदाई से **4.5** मीटर के सांस्कृतिक अनुक्रम का पता चला है जिसमें प्रारंभिक और परिपक्व हाकरा मृद्भाण्ड शामिल हैं। हड़प्पा संस्कृतियाँ प्रारंभिक और परिपक्व हड़प्पा संस्कृतियों के बीच एक संक्रमणकालीन चरण भी देखा गया है।

भिर्राना, एक हड़प्पा नगर

हाकरा मृद्भाण्ड संस्कृति के शुरुआती काल में, प्राकृतिक मिट्टी में काटे गए उप-स्थलीय गोलाकार गड्ढे वाले आवास शामिल थे। ये गड्ढे आवास हड़प्पा शहर के उत्तर में और शहर की प्रारंभिक हड़प्पा संरचनाओं के नीचे देखे गए हैं।

परिपक्व हड़प्पा शहर में दो प्रमुख प्रभागों के साथ एक गढ़वाली बस्ती शामिल थी। सांस्कृतिक अवशेषों में विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन, तांबे, फ़ाइनेस, स्टीटाइट, शंख, अगेट, कारेलियन, चैलेडोनी, जैस्पर, लापीस लाजुली और टेराकोटा जैसे अर्ध-कीमती पत्थरों की प्राचीन वस्तुएं शामिल हैं।

7. **सनौली**: सनौली, तहसील बड़ौत, जिला बागपत, उ.प्र. सितंबर **2005** से एएसआई द्वारा खुदाई चल रही है। यह स्थान एक आकस्मिक खोज थी जब स्थानीय लोगों ने कृषि उद्देश्यों के लिए समतलीकरण का कार्य किया था। इसके बाद, एएसआई ने इस स्थल की पहचान हड़प्पा काल के अंत (दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत) के एक प्रमुख कब्रिस्तान स्थल के रूप में की। उत्खनन से अब तक उत्तर-दक्षिण दिशा में **125** कब्रगाहों का पता चला है; उनमें से अधिकांश प्राथमिक अंत्येष्टि हैं। द्वितीयक और एकाधिक अंत्येष्टि के साक्ष्य भी नोट किए गए हैं। कुछ कब्रगाहों में मानव हड्डियों के बगल में जानवरों की हड्डियाँ भी पाई जाती हैं।

सनौली उत्खनन स्थल

दफ़नाने के सामान में फूलदान (अक्सर सिर के पास रखे जाते हैं, और विषम संख्या में, **3, 5, 7, 9, 11,** आदि), कटोरे, डिश-ऑन-स्टैंड (ज्यादातर कूल्हे के नीचे रखे जाते हैं), एंटीना

तलवारें और तांबे की म्यान, टीसी मूर्तियाँ, आदि। सोने और तांबे की चूड़ियाँ, अर्ध-कीमती पत्थरों के मोती (लंबे बैरल आकार के दो हार) और स्टीटाइट आदि के रूप में अच्छी संख्या में व्यक्तिगत आभूषण भी पाए जाते हैं। इन कब्रगाहों से प्राप्त एंटीना तलवारें तांबे के भंडार के नमूनों से काफी मिलती जुलती हैं।

एक ईंट की दीवार (**50 X 50 X 24** सेमी) के अवशेष, दो डिश-ऑन-स्टैंड और एक सपाट तांबे के कंटेनर (वायलिन के आकार का) जिसमें लगभग **35** तीर-सिर के आकार की तांबे की वस्तुएं पंक्तियों में रखी गई हैं, महत्वपूर्ण खोजों में से हैं। तांबे के कंटेनर के समान, एक अन्य प्रतीकात्मक दफन में तांबे के म्यान के साथ वायलिन के आकार में स्टीटाइट मोतियों की सावधानीपूर्वक व्यवस्था की गई थी। ये नमूने वास्तविक मनुष्यों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। ये नवीन पुरातात्विक स्थल हमें बताते हैं कि भारतीय सभ्यता कितनी प्राचीन और समृद्ध थी, और यह भी दिखाते हैं कि भारत में विकास के विभिन्न अवधारणाओं और प्राथमिकताओं का परिप्रेक्ष्य कैसे बदला है। इस प्रकार, नवीन पुरातात्विक स्थलों की खोज ने भारत की पुरातन और बेहद समृद्ध संस्कृति को एक नए प्रकार से प्रकट किया है, जिससे हमारे समाज में आत्म-संवेदना और गर्व बढ़ता है।

1.4 पुरातात्विक अन्वेषण एवं उत्खनन की विधियाँ

पुरातात्विक साक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रथम प्रमुख चरण पुरातात्विक क्षेत्रीय कार्य है। इन क्षेत्रों में पुरातात्विक साक्ष्यों को एकत्रित करने के लिए दो विधियाँ हैं। ये दोनों विधियाँ पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त करने के महत्वपूर्ण और मूल उपाय हैं, जो हमें इतिहास और पुरातात्विक धरोहर को समझने में मदद करती हैं।

i) पुरातात्विक अन्वेषण और
ii) पुरातात्विक उत्खनन |

i) पुरातात्विक अन्वेषण: पुरातात्विक अन्वेषण, स्थल की सतह पर पाए जाने वाले अवशेषों के आधार पर की जाती है, जिसमें पुरातत्वविदों द्वारा खुदाई की आवश्यकता नहीं होती। इसका मतलब है कि वे स्थल की सतह पर ही बिना खुदाई किए ही स्थल की जाँच करते हैं। इस प्रक्रिया का उद्देश्य अधिकांश बारिकी रूप से पुरातात्विक स्थलों की पहचान करना होता है, जो किसी क्षेत्र में पुरातात्विक महत्व रखते हैं।

पुरातत्वविद्या के क्षेत्र में विभिन्न तरीके होते हैं जिनका उपयोग स्थल की जाँच और अन्वेषण में किया जाता है। शुरुआत में, इसके लिए हवाई सर्वेक्षण का उपयोग किया जाता था, जिसमें हवाई जहाजों का सहारा लिया जाता था ताकि उच्च उपभूमि, फसलों के प्रकार, और क्षेत्र की विशेषताओं का पता लगाया जा सके। अब, इसकी जगह उपग्रहों और ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग किया जाता है। यह तकनीक स्थलों की खोज को सुगम बनाती है और उनका स्थान सही तरीके से चित्रित करती है। पुरातत्वविदों के द्वारा इस प्रक्रिया के अंदर, स्थलों के सटीक स्थान की पहचान करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाता है। इसमें भौतिक सर्वेक्षण योजनाएं, स्थानीय ग्रामीण सर्वेक्षण, और उपमहाद्वीप भर में विभिन्न पर्यावरणों में खोज किया जाता है। ये सभी तकनीक विभिन्न प्रकार के पुरातात्विक स्थलों की खोज और उनकी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने में मदद करती हैं।

इस प्रक्रिया का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा, पुरातात्विक स्थलों को नक्शे पर चित्रित करने के लिए ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) का उपयोग करके किया जाता है, जिससे स्थल की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस प्रक्रिया के बाद, उपयुक्त वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके खुदाई और उत्खनन कार्य किया जाता है, जिसमें ग्राउंड पेनेट्रेटिंग राडार (जीपीआर), विद्युत प्रतिरोधकता सर्वेक्षण, मैग्नेटोमेटरी, और अन्य तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इन तकनीकों को 'गैर-विनाशक' भी कहा जाता है क्योंकि वे पुरातात्विक रिकॉर्ड को बिना नुकसान के प्रकट करते हैं। अंत में, पुरातात्विक अन्वेषण के द्वारा हम अतीत की बेहतर समझ पाते हैं और नए पुरातात्विक स्थलों की खोज करने में मदद करते हैं। नवीन तकनीकों का प्रयोग पुरातात्विक उत्खनन में नए संदर्भ और नए दिशानिर्देशों को खोल सकता है, जिससे पुरातात्विक अनुसंधान में नवाचार और नये ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है।

ii) **पुरातात्विक उत्खनन:** पुरातात्विक स्थलों के अन्वेषण और उत्खनन से अतीत के बारे में कुछ प्रश्नों के उत्तर देने में हमें मदद मिलती है। हालांकि, सतह से एकत्र किए गए पुरावशेष अपने मूल संदर्भ में नहीं पाए जाते हैं, क्योंकि सतह पर उनकी उपस्थिति उन गतिविधियों का एक परिणाम है, जिन्होंने मूल अभिसाक्ष्यों को दिग्भ्रमित किया है। उदाहरण के लिए, बारिश से कटाव, जुताई, जानवरों को दफनाने आदि के कारण सतह के पास पुरातात्विक जमाव का विस्थापन हो सकता है। इसलिए, एक स्थल के विभिन्न सांस्कृतिक चरणों व उसके संदर्भों की गहरी समझ के लिए पुरातात्विक खुदाई की जाती है। इसमें व्यवस्थित रूप से एक स्थल की खुदाई करके अतीत में मानव द्वारा बनाए गए और उपयोग की गई सामग्रियों को सावधानीपूर्वक उजागर किया जाता है।

पुरातात्विक स्थलों पर विभिन्न पुरातात्विक संस्कृतियों के अवशेष पाए जाते हैं। 1929 में वी. गॉर्डन चाइल्ड ने बर्तन, औज़ार, गहने, दाह संस्कार, घर इत्यादि अवशेषों को पुरातात्विक संस्कृति के रूप में परिभाषित किया। इस प्रकार के अवशेष समय और स्थान के अनुसार अलग-अलग तरह के होते हैं। इसलिए, उन्हें विभिन्न पुरातात्विक संस्कृतियों के रूप में पहचाना जाता है। पुरातात्विक स्थलों पर या एकल पुरातात्विक संस्कृति का आधिपत्य होता है या लंबे समय तक रहने से कई पुरातात्विक संस्कृतियाँ मिल सकती हैं। विभिन्न संस्कृतियों की क्रमिक उपस्थिति उनके कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाती हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न पुरातात्विक संस्कृतियों में हड़प्पा संस्कृति, चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति, ज़ोरवे संस्कृति आदि शामिल हैं।

पुरातात्विक उत्खनन मुख्य रूप से विभिन्न अवधियों से संबंधित अवशेषों के कालानुक्रमिक संदर्भों को समझने के लिए स्तरविज्ञान की अवधारणा को नियुक्त करता है। भूविज्ञान से व्युत्पन्न, स्तरीकरण की अवधारणा स्तरीकरण की प्रक्रिया पर आधारित है। भूविज्ञान में तलछट परतें या जमाव बहुत धीरे-धीरे एक दूसरे पर जमा होती हैं। इस प्रक्रिया में जो परत नीचे होती है, वह पहले जमा होती है और बाद में जमा होने वाली परतें बाद के काल की होती हैं। इसे अधीक्षण के नियम के रूप में जाना जाता है। पुरातात्विक स्थलों पर पहली बसावट के लक्षण सबसे निचले स्तर पर पाए जाते हैं और जैसे-जैसे निक्षेप जमा होता है और शीर्ष तक पहुँचता है तब हम बसावट का क्रम देख सकते हैं सबसे हाल की परत सतह के पास होती है। उद्देश्यों के आधार पर उत्खनन के दो प्राथमिक तरीके हैं जिनसे पुरातात्विक स्थलों की खुदाई की जा सकती है:

1. क्षैतिज, और
2. ऊर्ध्वाधर

इसकी अंतर्निहित धारणा यह है कि, मोटे तौर पर, समकालीन गतिविधियाँ क्षैतिज स्थान पर विद्यमान होती हैं और समय-समय पर इसमें बदलाव होते रहते हैं। इसलिए, यदि हम स्थल के किसी विशेष चरण के बारे में विस्तार से जानना चाहते हैं कि लोग कैसे रहते थे, तो स्थल की क्षैतिज रूप से खुदाई की जा सकती है। क्षैतिज खुदाई में स्थल के एक बड़े हिस्से के एक विशेष चरण के समकालीन संरचनाओं और गतिविधियों को उजागर करने के लिए धीरे- धीरे खुदाई की जाती है। इसके विपरीत, ऊर्ध्वाधर खुदाई में छोटे क्षेत्रों की खुदाई की जाती है। इसमें जमाव के माध्यम से प्राकृतिक मिट्टी के उस स्तर तक खुदाई की जाती है, जहाँ उस ज़मीन पर सबसे पहले बसावट हुई थी। इस तरह ऊर्ध्वाधर खुदाई से हमें पुरातात्विक स्थलों पर हुए कालानुक्रमिक परिवर्तनों की एक झलक देखने को मिल जाती है। दूसरे शब्दों में, ऊर्ध्वाधर उत्खनन से हमें पुरातात्विक स्थलों पर हुए विभिन्न सांस्कृतिक चरणों की क्रमिक बसावट के बारे में पता चलता है। अतएव दोनों प्रकार की खुदाई की विधियों में उनकी खूबियाँ और सीमाएँ दोनों हैं।

पुरात्विक उत्खनन एक विनाशकारी प्रक्रिया है क्योंकि इसमें चीजों को उजागर करने के लिए पुरात्विक जमाव को हटाने की आवश्यकता होती है। यह एक अपरिवर्तनीय प्रक्रिया भी है, जिसमें एक बार खुदाई के बाद जमाव को पुनः ठीक नहीं किया जा सकता है। इसलिए, पुरातत्वविद् तथ्यों के विवरण और रिकॉर्डिंग में अत्यधिक सावधानी रखते हैं। खुदाई के बाद पाया गया विवरण ही अध्ययन के आगे की प्रक्रिया को जारी रखता है। उत्खनन से मिली विभिन्न प्रकार की सामग्रियों से बीते हुए युगों के बारे में पता चलता है। ये सामग्रियाँ हमें बताती हैं कि लोग किस तरह के घरों में रहते थे। इस तथ्य-संकलन से कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं जैसे:

- पक्की ईंटें अथवा छप्पर वाले ढांचे कैसे बने थे?
- क्या उनकी बस्तियों में कुएँ, टैंक, स्नानघर, शौचालय, भंडारण स्थान, जल निकासी, धर्मस्थल या पूजा स्थल आदि थे?
- उन्होंने किस तरह के औज़ारों का इस्तेमाल किया?
- क्या वे लंबी दूरी के व्यापार में लगे थे?
- उनकी सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली क्या रही होगी?
- उन्होंने अपने मृतकों के साथ कैसा व्यवहार किया?
- मानव द्वारा बनाई और उपयोग की गई सामग्रियाँ प्राचीन मानव जीवन के कई और पहलुओं को प्रकाशित करती हैं।

पुरातात्विक अन्वेषण और उत्खनन द्वारा इकट्ठा किए गए तथ्य हमें अतीत को समझने में मदद करते हैं और हमारी ज्ञान को विस्तार से बढ़ाते हैं। इसके अलावा, यह हमें अपनी धर्मिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास को समझने में भी मदद करता है और हमारे समाज के विकास के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकाशित करता है।

1.5 नवीन पुरातत्व एवं साक्ष्यों की विश्लेषण पद्धति

नवीन पुरातत्व एवं साक्ष्यों की विश्लेषण पद्धतियाँ अद्वितीय तरीकों से पुरातात्विक संग्रहण के प्रयासों को समर्थन करने और नए जानकारी को प्राप्त करने में मदद करती हैं। इन पद्धतियों का उद्देश्य नए सूचनाओं को प्राप्त करना, पुरातात्विक संग्रहण को सुधारना, और इतिहास के विभिन्न पहलुओं को समझना है।

नवीन पुरातत्व और विश्लेषण पद्धतियों की कुछ मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रेडार (GPR): GPR** उपकरण भूमि के नीचे के स्तरों की छवि बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह छवियों को तराशकर विभिन्न उपयोगियता के साथ प्रदान करता है, जैसे कि किसी पुरातात्विक स्थल के नीचे छिपी धातुकला, संरचनाएँ, और अन्य विशेषताएँ।

2. **लिडार (LIDAR):** लिडार प्रक्रिया का उपयोग विमानों या उच्चतम नक्शा करने के लिए किया जाता है। यह उच्च गुणवत्ता की छवियों बनाता है जो भूमि की विविध विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं, जैसे कि पुरातात्विक स्थल की संरचनाएँ और तटीय सीमाओं के नक्शे।

3. **डीएनए एनालिसिस (DNA Analysis):** डीएनए एनालिसिस अभियांत्रिकी और जीवविज्ञान का मिश्रण है जिससे इतिहास के पुरातात्विक अध्ययन के लिए जीवाणुओं, जानवरों, और मानव रिश्तों का पता लगाया जा सकता है।

4. **उच्च गुणवत्ता के वीडियो और फोटोग्राफी:** नवीन पुरातात्व उत्खनन में उच्च गुणवत्ता के वीडियो और फोटोग्राफी का उपयोग होता है जो स्थल की छवि बनाने में मदद करता है और प्राप्त जानकारी को डोक्यूमेंट करता है।

5. **डेटा विश्लेषण सॉफ़्टवेयर:** विशेषाग्र सॉफ़्टवेयर जैसे कि **Geographic Information Systems (GIS)** और **3D** मॉडलिंग प्रोग्राम्स का उपयोग डेटा को विश्लेषण और प्रस्तुत करने में किया जाता है।

6. **रेडार कैरोनोलॉजी:** यह उपयोगी टूल आर्कियोलॉजिस्ट्स को पुरातात्विक स्थल के नीचे के स्तरों की जांच करने में मदद करता है, खासकर जब खोदने के लिए उपयुक्त नहीं होता है।

7. **रोबोटिक्स और ऑटोमेशन:** रोबोट्स और ऑटोमेशन तकनीक का उपयोग खोदने के काम में किया जाता है, जिससे काम को तेजी से और सुरक्षित तरीके से किया जा सकता है।

इन पद्धतियों का उपयोग पुरातात्विक संग्रहण को सुधारने, नई जानकारी को प्राप्त करने और पुरातात्विक खोज को समर्थन करने के लिए किया जाता है। ये उपकरण और तकनीकियाँ पुरातात्विक अध्ययन को नई दिशाओं में ले जा रही हैं, जिससे हम हमारे इतिहास और धरोहर के बारे में नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

1.5.1 पुरातात्विक तिथिक्रम प्रणाली

पुरातात्विक तिथिक्रम प्रणाली, पुरातात्विक संग्रहण के लिए उपयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण तिथि प्रणाली है, जिसका उद्देश्य ऐतिहासिक घटनाओं और खनन के साथ-साथ खुदाई के प्रमाणों को डेटा के रूप में संग्रहण करना होता है। यह पुरातात्विक खोज और अध्ययन के प्रयासों को संरचित और आधारभूत तिथि क्रम में प्रस्तुत करने में मदद करता है। कुछ महत्वपूर्ण तत्व और नियम जो पुरातात्विक तिथिक्रम प्रणाली में शामिल होते हैं:

- **सम्पादन तिथि (Editing Date):** यह तिथि उस समय की तिथि होती है जब पुरातात्विक डेटा का संपादन या प्रकाशन किया गया था।
- **खुदाई तिथि (Excavation Date):** यह तिथि विशेष स्थल पर खुदाई के दौरान खोदे जाने वाले खदान के निमित्त की गई होती है।
- **संग्रहण तिथि (Collection Date):** यह तिथि उन वस्त्रों या आवश्यक साक्षरता के प्रमाणों की होती है जो संग्रहित किए गए हैं और उन्हें पुरातात्विक संग्रहण केंद्र में रखा गया है।
- **उपलब्धि तिथि (Discovery Date):** यह तिथि विशिष्ट पुरातात्विक आवश्यकताओं के आधार पर किसी वस्तु की प्राप्ति की तिथि होती है, जैसे कि किसी स्थल पर अवशेषों की पहचान करने की तिथि।
- **संग्रहण स्थान (Collection Location):** यह विशिष्ट स्थल की स्थिति को सूचित करता है जहां संग्रहित पुरातात्विक प्रमाण रखे जाते हैं।
- **स्थल का नाम (Site Name):** पुरातात्विक खदान स्थल का नाम यहां पर दर्ज किया जाता है।
- **संग्रहण नंबर (Catalog Number):** यह नंबर विशिष्ट प्रमाण की पहचान के लिए उपयोग होता है और उसकी संग्रहण के लिए एक अनुभवित पुरातात्विक संग्रहण केंद्र द्वारा प्रदान किया जाता है।
- **किस्म (Type):** इस खण्ड में प्रमाण के प्रकार (जैसे मानव संरचना, खिलौना, धातुकला, आदि) का उल्लेख किया जाता है।
- **स्रोत (Source):** यह खण्ड बताता है कि प्रमाण की प्राप्ति का स्रोत क्या था, जैसे कि खुदाई, खदान, खरीद, या दान।
- **महत्वपूर्ण टिप्पणियां (Significant Notes):** इस खण्ड में किसी प्रमाण के महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन किया जा सकता है, जैसे कि किसी खिलौने की स्थापना या खदान की गहनता।

पुरातात्विक तिथिक्रम प्रणाली खोदाई के परिणामों को संरचित रूप से डेट करने और डेटा को प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण होती है जो पुरातात्विक अध्ययन में महत्वपूर्ण होती है।

1.5.2 पुरातात्विक साक्ष्यों का महत्व

नवीन पुरातात्विक साक्ष्यों का महत्व पुरातात्व और इतिहास के अध्ययन में क्रियाशीलता और ज्ञान को बढ़ावा देता है। इन साक्ष्यों का महत्व निम्नलिखित कारणों से होता है:

- **नई जानकारी का उद्घाटन**: नवीन पुरातात्विक साक्ष्य नई जानकारी और दस्तावेज़ों का स्रोत प्रदान करते हैं, जो इतिहासी और पुरातात्विक अध्ययन में पहले अज्ञात थी। यह नए तथ्यों का पता लगाने में मदद करता है और हमारे पूर्वजों की जीवनशैली, संस्कृति, और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में नई सूचनाएं प्रदान करता है।

- **पुरातात्विक अध्ययन में अद्यतनता**: नवीन पुरातात्विक साक्ष्य अद्यतन तकनीकों और अनुसंधान के साथ आते हैं, जिससे पुरातात्विक अध्ययन के क्षेत्र में नए उपयोगी तरीके और तंत्रिकाएं विकसित होती हैं। इससे अध्ययन के प्रयोगकर्ताओं को अधिक समृद्ध और प्रभावी तरीके से पुरातात्विक खोजने में मदद मिलती है।

- **सम्प्रेषित इतिहास का गहराई से अध्ययन**: नए साक्ष्यों का अध्ययन पुराने इतिहासिक घटनाओं और समय के लिए छिपे रहे तथ्यों की पुष्टि करता है और हमें इतिहास की गहराइयों में जाने में मदद करता है।

- **बुनावटी और सांख्यिकीय डेटा**: नवीन पुरातात्विक साक्ष्यों का विशेष महत्व बुनावटी और सांख्यिकीय डेटा प्रदान करने में होता है, जिससे हम समय के पार पुरातात्विक घटनाओं के सांख्यिकीय और सामाजिक पहलुओं की समझ पा सकते हैं।

- **नवीन दृष्टिकोण और समझ**: नवीन साक्ष्यों के प्रकट होने से अक्सर हमारा इतिहास और पुरातात्व के प्रति नया दृष्टिकोण और समझ बनता है। इससे हम अपने अद्वितीय इतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

- **राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व**: नवीन पुरातात्विक साक्ष्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के होते हैं, जो एक देश के इतिहास और संस्कृति को प्रमोट करने में मदद करते हैं और संस्कृति के महत्व को विश्व में प्रस्तुत करते हैं।

- **शिक्षा और अध्ययन के लिए स्रोत**: नवीन पुरातात्विक साक्ष्य शिक्षा और अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। इन्हें स्कूल, कॉलेज, और विश्वविद्यालयों में शिक्षार्थियों के अध्ययन के लिए उपयोग किया जा सकता है, जिससे उनका ज्ञान और समझ में वृद्धि होती है।

- **सामाजिक समझदारी**: नवीन पुरातात्विक साक्ष्य सामाजिक समझदारी को बढ़ावा देते हैं, क्योंकि वे समाज के पुरातात्विक धरोहर को समझने में मदद करते हैं और लोगों के बीच साझा करने के लिए होते हैं।

इसलिए, नवीन पुरातात्विक साक्ष्यों का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि ये हमें हमारे इतिहास और संस्कृति को बेहतर तरीके से समझने में मदद करते हैं और नए ज्ञान का स्रोत प्रदान करते हैं।

1.6 नवीन पुरातात्विक उत्खनन के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव

नवीन पुरातात्विक उत्खनन के सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक प्रभाव विभिन्न हो सकते हैं और इन्हें निम्नलिखित तरीकों से समझा जा सकता है:

1. **सामाजिक प्रभाव**:

   शिक्षा और संज्ञान: पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से नए जानकारी का प्राप्त होने से समाज में शिक्षा और संज्ञान का स्तर बढ़ सकता है। यह विशेषकर शैक्षिक संस्थानों और छात्रों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर खोल सकता है।

   समाज का आत्मगौरव: पुरातात्विक उत्खनन के द्वारा मिली जानकारी आत्मगौरव और समाज में जागरूकता को बढ़ा सकती है। समाज का आत्म-परिचय बढ़ सकता है जिसके परिणामस्वरूप समाज की सामाजिक संरचना में सुधार हो सकता है।

   सामाजिक संगठन: पुरातात्विक उत्खनन के फलस्वरूप समाज के सामाजिक संगठन में परिवर्तन हो सकता है। यह नए जानकारी के प्राप्त होने से समाज के विभिन्न समूहों को जोड़ने और सामाजिक समस्याओं का समाधान करने का माध्यम बना सकता है।

2. **सांस्कृतिक प्रभाव**:

   पुरातात्विक धरोहर का संरक्षण: नवीन पुरातात्विक उत्खनन से पुरातात्विक धरोहर का संरक्षण किया जा सकता है। यह नए संग्रहणों, म्यूजियम्स, और स्थलीय कला और संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

   समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर: पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के अंशों का पता चल सकता है, जो समृद्ध सांस्कृतिक समुदायों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

3. **आर्थिक प्रभाव**:

   पर्यटन और आर्थिक विकास: पुरातात्विक स्थलों के प्रशंसकों के लिए पर्यटन का अवसर पैदा हो सकता है, जिससे स्थानीय आर्थिक विकास हो सकता है।

   उत्खनन कार्यों का स्रोत: पुरातात्विक उत्खनन कार्यों का आयोजन करने और संचालन के लिए वित्तीय स्रोत के रूप में उत्खनन के परिणामों का उपयोग किया जा सकता है।

इन प्रभावों के साथ, नवीन पुरातात्विक उत्खनन का महत्वपूर्ण योगदान सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक दृष्टिकोण से हो सकता है और समृद्धि और समाज के विकास में मदद कर सकता है।

1.6.1 नवीन पुरातात्विक उत्खनन के अनुसंधान की आवश्यकता और संभावनाएं

नवीन पुरातात्विक उत्खनन के अनुसंधान की आवश्यकता और संभावनाएं विशिष्ट आवश्यकताओं, सामाजिक मांगों, और विज्ञान विकास के संदर्भ में अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन कुछ सामान्य आवश्यकताएं और संभावनाएं निम्नलिखित हो सकती हैं:

आवश्यकताएं:

अज्ञात इतिहास की खोज: पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से हम अज्ञात इतिहास के प्रमुख अध्ययन कर सकते हैं, जो हमारे पास विगत समय के बारे में जानकारी नहीं होती है।

प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन: नवीन पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से हम प्राचीन सभ्यताओं के विकास, समाज, और संस्कृति का अध्ययन कर सकते हैं, जो हमें हमारे इतिहास और मानव सभ्यता के बारे में नई जानकारी प्रदान करता है।

प्राचीन समर्थन और प्रौद्योगिकी: नवीन तकनीक और उपकरणों का उपयोग करके, हम पुरातात्विक समर्थन और प्रौद्योगिकी के स्तर को बढ़ा सकते हैं, जिससे उत्खनन की प्रक्रिया और डेटा संग्रहण को सुविधाजनक बनाया जा सकता है।

पुरातात्विक स्थलों के पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन: नवीन पुरातात्विक उत्खनन के अंदरूनी और बाहरी पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करने से हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं कि कैसे पुरातात्विक स्थलों का प्रबंधन और संरक्षण किया जा सकता है।

संभावनाएं:

प्रौद्योगिकी और डेटा संग्रहण: नवीन पुरातात्विक उत्खनन के साथ-साथ नवाचारी प्रौद्योगिकी का उपयोग करके डेटा संग्रहण, विश्लेषण, और साझा करने की संभावना है।

जीवाशास्त्रीय अध्ययन: पुरातात्विक खोज के दौरान मृदांग, जीवों के अवशेष, और आदिकालीन प्राणियों के अध्ययन के लिए जीवाशास्त्र के तरीकों का उपयोग किया जा सकता है।

आर्कियोलॉजिकल टूल्स: नई और बेहतर खोदने के औजार और तकनीक का उपयोग करके, आर्कियोलॉजिस्ट्स खुदाई की प्रक्रिया को सरल और तेज बना सकते हैं।

सांविदानिक सहमति: स्थानीय समुदायों, सरकारी अधिकारियों, और अन्य संगठनों के साथ मिलकर काम करने के लिए सांविदानिक सहमति प्राप्त करना संभावना है, ताकि पुरातात्विक उत्खनन की प्रक्रिया को समर्थन मिल सके।

पुरातात्विक प्रबंधन: पुरातात्विक स्थलों के प्रबंधन और संरक्षण के लिए नए उपायों और नीतियों का विकास किया जा सकता है, ताकि हम इन महत्वपूर्ण स्मृतियों को सुरक्षित रख सकें।

नवीन पुरातात्विक उत्खनन का अनुसंधान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें हमारे इतिहास और संस्कृति के बारे में नई जानकारी प्रदान करता है और हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में मदद करता है।

1.6.2 नवीन पुरातात्विक उत्खनन के भविष्य के दिशानिर्देश

नवीन पुरातात्विक उत्खनन हमें भविष्य के दिशानिर्देश भी प्रदान कर सकता है, क्योंकि हम इतिहास से सिखकर पुनरावलोकन करते हैं और उससे सिखते हैं कि कैसे हम आगे बढ़ सकते हैं और अपने गलतियों से सीखते हैं। नवीन पुरातात्विक उत्खनन का प्रस्तावना हमें दिखाता है कि यह अध्ययन कितना महत्वपूर्ण और विशिष्ट है जो हमें अपने मानव सभ्यता के रूपरेखा को

समझने में मदद करता है और हमें हमारे इतिहास के मूल मूल्यों की पहचान करने में सहायक हो सकता है। नवीन पुरातात्विक उत्खनन के भविष्य के दिशानिर्देश या नीतियों को स्पष्ट करने के लिए कुछ मुख्य दिशानिर्देश हो सकते हैं:

- **स्थल का चयन**: उत्खनन करने से पहले, उत्खनन स्थल का सावधानीपूर्वक चयन करना महत्वपूर्ण है। उत्खनन करने के लिए स्थल का इतिहास, पुरातात्विक महत्व, और पुरातात्विक संकेतों के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए।
- **अनुमानित यातायात**: उत्खनन करने से पहले, यातायात के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक पहुँच की योजना बनानी चाहिए, ताकि उत्खनन टीम स्थल पर आसानी से पहुंच सके।
- **कला और विज्ञान का संयोजन**: उत्खनन की प्रक्रिया में कला और विज्ञान के संयोजन का समर्थन करना चाहिए, ताकि पुरातात्विक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
- **सुरक्षा की जिम्मेदारी**: उत्खनन करने वाले लोगों की सुरक्षा का पूरा ध्यान देना चाहिए, खासकर जब किसी पुरातात्विक स्थल को उत्खनन किया जा रहा है।
- **प्रौद्योगिकी और उपकरण**: उत्खनन के लिए उपयोग होने वाली प्रौद्योगिकियों और उपकरणों का चयन और उपयोग करने का तरीका निर्धारित करना चाहिए।
- **प्रामाणिकता की परख**: पुरातात्विक उत्खनन के परिणामों की पुष्टि करने के लिए प्रामाणिकता की परीक्षा करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए उचित प्रमाणिक और विज्ञानिक प्रक्रियाओं का पालन किया जाना चाहिए।
- **रिपोर्टिंग और डेटा संग्रहण**: पुरातात्विक उत्खनन के परिणामों को विश्व के साथ साझा करने के लिए उचित रिपोर्टिंग और डेटा संग्रहण की योजना बनानी चाहिए।
- **सांविदानिक अनुमति**: किसी भी पुरातात्विक उत्खनन के लिए आवश्यक राज्य या स्थानीय प्राधिकृतियों की अनुमति प्राप्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।
- **पर्यावरण का संरक्षण**: पुरातात्विक स्थल के पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण का ध्यान रखना चाहिए, ताकि इसका भविष्य के लिए नुकसान न हो।
- **सामाजिक सहमति**: स्थानीय समुदायों और स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर काम करना और उनकी सहमति प्राप्त करना महत्वपूर्ण है।

ये दिशानिर्देश पुरातात्विक उत्खनन के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन यह निश्चित है कि वे स्थानीय संदर्भों और आवश्यकताओं के हिसाब से अनुकूलित किए जाने चाहिए।

1.7 सारांश

नवीन पुरातात्विक उत्खनन एक प्रेरणास्त्रोत और ज्ञानार्जन का माध्यम है जिसका उद्देश्य प्राचीन साक्ष्यों के माध्यम से मानव सभ्यता की विकास की अध्ययन करना होता है। इसका उद्देश्य अनुसंधान, अध्ययन, और शिक्षा के माध्यम से हमें हमारे पूर्वजों की जीवनशैली, संगठन,

सांस्कृतिक विविधता, और समाजिक परिवर्तन की समझ प्रदान करना है। इस प्रक्रिया में विभिन्न तकनीकों का प्रयोग किया जाता है जैसे कि रेडार, लिडार, साटेलाइट इमेजिंग, जियोफिजिकल तकनीकें, आइएनएच, आदि। ये तकनीकें हमें सूचनाओं की सटीकता और व्यापकता में मदद करती हैं और साक्ष्यों की पहचान और विश्लेषण में सहायक साबित होती हैं।

नवीन पुरातात्विक उत्खनन से हम विभिन्न समयों और स्थानों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध, विकास, और परिवर्तन की समझ प्राप्त करते हैं, जिससे हमारे पूर्वजों के विचारों, आदिकाल के जीवनशैली, समाज संरचना, और सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इसके साथ ही नवीन पुरातात्विक उत्खनन शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को ऐतिहासिक और पुरातात्विक ज्ञान में रुचि और समझ को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। इस अध्ययन से हम अपनी मानव सभ्यता की मूल जड़ों को समझते हैं, जिससे हमारे आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है और हम अपने विकास की दिशा में सजग रह सकते हैं।

इस प्रकार नवीन पुरातात्विक उत्खनन समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण और जरूरी उपकरण हो सकता है जो हमें हमारे इतिहास और संस्कृति के मूल मूल्यों की पहचान करने में मदद करता है।

1.8 पारिभाषिक शब्दावली

- **पुरातात्विक उत्खनन:** यह एक शाखा है जो पुराने और ऐतिहासिक साक्ष्यों की पहचान, संग्रहण, और अध्ययन के माध्यम से मानव सभ्यता की अध्ययन करती है।
- **साक्ष्य:** पुरातात्विक उत्खनन में, साक्ष्य विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों को समझने के लिए उपयुक्त तकनीकों का प्रयोग करके प्राप्त किए गए विशेष आवश्यक सूचनाओं को सूचित करते हैं।
- **तकनीकें:** यह उन विभिन्न तकनीकों की संग्रहण करता है जिनका प्रयोग पुरातात्विक साक्ष्यों की खोज, पहचान और अध्ययन में होता है, जैसे कि रेडार, लिडार, साटेलाइट इमेजिंग, आदि।
- **ऐतिहासिक समय:** पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से हम विभिन्न ऐतिहासिक समयों की जानकारी प्राप्त करते हैं जो हमें मानव सभ्यता के विकास की कहानी को समझने में मदद करती है।
- **पुरातात्विक खंड:** ये विभिन्न स्थलों में प्राप्त किए गए पुरातात्विक साक्ष्य होते हैं, जैसे कि शिलालेख, मूर्तियाँ, आदि।
- **शिक्षा और संशोधन:** पुरातात्विक उत्खनन शिक्षा और संशोधन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है, क्योंकि इससे हम विद्यार्थियों को ऐतिहासिक और पुरातात्विक ज्ञान में रुचि और समझ को बढ़ावा दे सकते हैं।
- **सांस्कृतिक परिवर्तन:** नवीन पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से हम समय के साथ सांस्कृतिक परिवर्तनों की समझ प्राप्त करते हैं और उनके पीछे के कारणों को समझते हैं।

- **विविधता:** पुरातात्विक उत्खनन से हम विभिन्न समयों और स्थानों की विविधता को समझ सकते हैं, जिससे हम यह समझ सकते हैं कि मानव सभ्यता की अनूठी और विविध प्रकृति कैसे रही है।

1.9 सन्दर्भग्रन्थ सूची

- चक्रवर्ती, डी. के. (2001) इंडिया, एन आर्कायोलॉजिकल हिस्ट्री: पैल्योलिथिक बिगनिग्स टू अर्ली हिस्टोरिक फाउण्डेशन्स. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस |
- ड्रिवेट, पी. एल. (1999) फील्ड आर्कायोलॉजी : एन इंट्रोडक्शन. लंदन: यूसीएल प्रेस
- ग्रीन, के. (2002) आर्कोयोलॉजी: एन इंट्रोडक्शन. लंदन और न्यूयॉर्क: रूटलेज।
- रैनफ्रू, सी. एवं पी. व्हान (2012) आर्कोयोलॉजी : थ्योरीज़, मैथड्स एंड प्रैक्टिस छठवाँ संस्करण, लंदनः थेम्स और हडसन।
- पाण्डेय, जय नारायण (2023) पुरातत्त्व विमार्श, प्रयागराज, प्राच्य विद्या संस्थान।

1.10 बोध प्रश्न

1. नवीन पुरातात्विक उत्खनन क्या है? और इसका क्या महत्व है?
2. नवीन पुरातात्विक उत्खनन में कौन-कौन सी तकनीकें प्रयुक्त होती हैं और उनका क्या महत्व है?
3. पुरातात्विक साक्ष्य और उनके प्रकार क्या-क्या होते हैं?
4. नवीन पुरातात्विक उत्खनन के माध्यम से हम किस प्रकार सांस्कृतिक परिवर्तन की समझ प्राप्त कर सकते हैं?
5. नवीन पुरातात्विक उत्खनन कैसे शिक्षा और संशोधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हो सकता है?